Time : 3 Hrs. **Marks : 80**

विभाग १ – गद्य

प्र.१ अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) संजाल पूर्ण कीजिए।

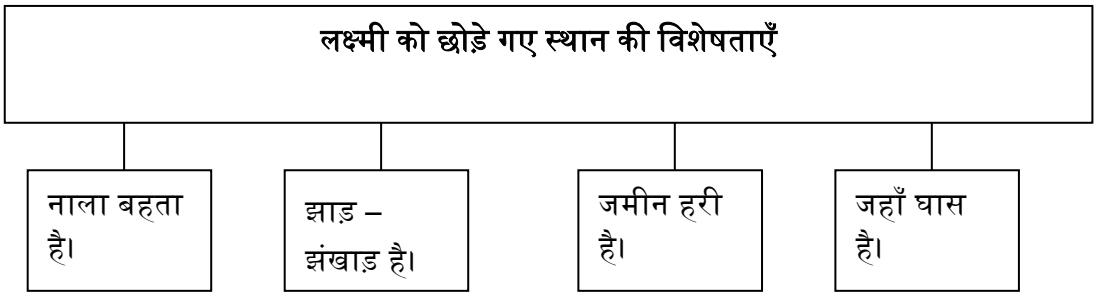

२) केवल एक / दो शब्दों में उत्तर लिखिए:

i) करामत अली इस समय ड्युटी से लौटा – दोपहर

ii) दुसरों की गाय का चारा खानेवाली- लक्ष्मी

iii) रमजानी इसकी बातें सुनती रही – एक आगंतुक

iv) लक्ष्मी को देखकर आश्चर्यचकित होनेवाले – माँ बेटे

३) क) वचन परिवर्तन कीजिए:

i) इलाके – इलाका ii) रस्सी – रस्सियाँ

ख) लिंग परिवर्तन कीजिए:

i) बेटा – बेटी ii) गाय – बैल

४) पालतू हो या जंगली, जानवरों को भी इंसानो की तरह जीने का हक है। परंतु मनुष्य उनके साथ बेरहमी से पेश आते हैं। उनपर डंडे बरसाना, उन्हें रस्सियों से जकड़ना, पिंजड़े में कैद करना आदि बातें हम सरे आम देखते हैं। अब देश में जानवरों की सुरक्षा के लिए कानून भी मौजूद है। बेजुबान जानवरों के लिए बनाए गए कानून का पालन करना और उनके प्रति हमदर्दी रखना प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है। जानवरों के प्रति प्रेमपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। बीमारी में उनको भी इलाज और देखभाल की आवश्यकता होती है इसका ख्याल रहें। बुढ़ापें में जब सहारे की आवश्यकता होती है हमें पीछे नहीं हटना चाहिए बल्कि उनका सहारा बनकर मानवता दिखलानी चाहिए।

प्र.१ आ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) उत्तर लिखिए:

अ) लेखक द्वारा संतरी को दी गई दो सूचनाएँ :

i) सैलूट – वैलूट नहीं करना।

ii) धीरे से गेट खोल दो।

२) लिखिए:

अ) शान की सवारी याद आने का परिणाम – बदन में झुरझुरी आने लगी।

ब) बातचीत में समय बिताने क परिणाम – घर लौटने में देर हो गई।

३) **क) गद्याशं से दो शब्द ढूँढकर लिखिए जिनका वचन परिवर्तन से रूप नहीं बदलता:**

i) घर **ii)** बदन

ख) गद्याशं में आए प्रयुक्त शब्द – युग्म ढूँढ़कर लिखिए :

i) सैलूट – वैलूट **ii)** खट – पट

४) दादा दादी एवं बड़े बुजुर्ग हमारे सही मार्गदर्शक होत हैं। वे अपने अनुभवों से हमें सही राह पर चलने में मदद करते हैं। उनका सम्मान करना हमारा कर्तव्य है। उम्र के आखरी पड़ाव पर उन्हें अकेलापन सताता है। अत: उनके लिए समय निकालना और उनसे बातें करना हमारा कर्तव्य बनता है। उनकी सेहत और खान – पान का विशेष ख्याल रखना चाहिए। अपने जीवन की हर खुशी में उन्हें सम्मिलित करना चाहिए। शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे वे कमजोर हो जाते हैं तथा छोटी छोटी बातों पर गुस्सा हो जाते हैं। उनके इस चिड़चिड़ेपन पर भी उनके साथ दुर्व्यवहार न करते हुए समझदारी से पेश आना चाहिए। उन्हे समय समय पर दवा – पानी, कसरत की जरूरत ये सभी बातें मैं अपने दादा – दादी के प्रति कर्तव्य समझकर करने का प्रयास करूँगा और जीवन का आखरी पड़ाव सुख – शांति और आनंद से पार करने में मैं उनकी मदद करूँगा।

प्र.१ इ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) **घटक लिखिए:**

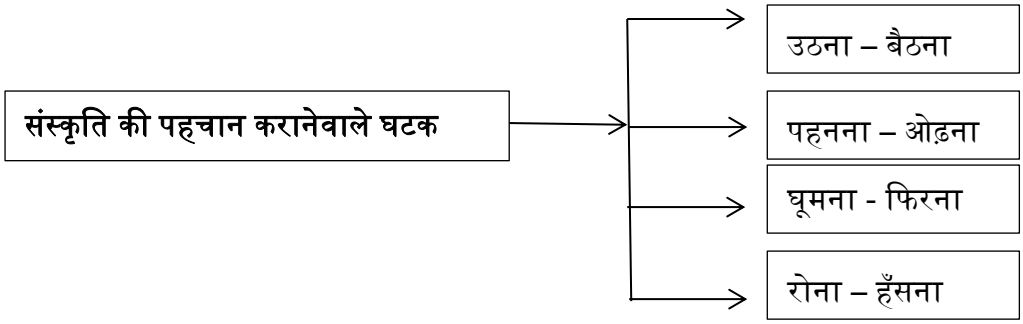

२) आज पाश्चात्य संस्कृति ने भारतीय जनमानस को और विशेषत: युवा वर्ग को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। उपभोक्तावाद की संस्कृति बढ़ रही है। रिश्तों में मिठास नही रही। उसकी खुली सोच और खुलेपन का अंधानुकरण करने से मानव मस्तिष्क पर उसका विपरीत असर हो रहा है। हम अनुशासन भूल रहे है। भ्रष्ट्राचार, अपराध के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। बदलाव की आँधी में बहकर हम अपनी धरोहर को खो रहे हैं, हमारे मूल्य कमजोर पड़ रहे हैं। वास्तव में पश्चिमी रहन – सहन, खान – पान ही पश्चिमी संस्कृति नहीं है। हम उनकी अच्छी बातों का अनुकरण कर अपनी संस्कृति की जड़ें जमीन में और गहराई तक ले जा सकते हैं। उनकी साफ – सफाई की आदत, उनके यातायात के नियमों का सख्ती से पालन करना, व्यावसायिकता, स्त्री – पुरूष समानता जैसी कई बातें हैं। जिन्हें हम अपना सकते हैं। तात्पर्य यह कि संस्कृति के गुणों को परखकर अपनाने से उसका प्रभाव अच्छा होगा और अंधानुकरण हमें कही का नहीं रहने देगा।

विभाग २ – पद्य

प्र.२ अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) **ii)** आकृति पूर्ण कीजिए ।

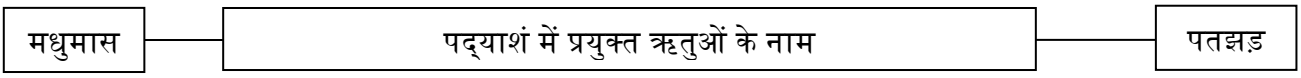

i) आकृति पूर्ण कीजिए ।

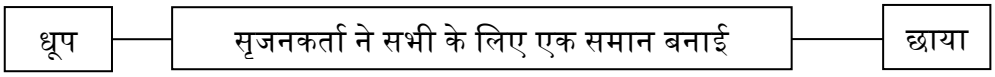

२) **i)** पद्यांश मे आए दो तत्सम शब्द खोजकर लिखिए:

अ) कृषक ब) सृजक

ii) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द पद्यांश में से खोजकर लिखिए:

१. असंतोष – संतोष २. विध्वंस - निर्माण

३) कवि प्रस्तुत कविता में किसान की दुर्दशा का वर्णन करते हुए कहता है कि किसान के हाथों में संतोष की तलवार है अर्थात उसमें संतोष की भावना है। इसके बावजूद भी एक तरफ जहाँ पूरा जगत मधुमास अर्थात वसंत की भाँति खुशियाँ मना रहा है, वहीं दुसरी तरफ किसान का जीवन पतझड़ की भाँति नीरस व दुखों से घिरा हुआ है। इसके बावजूद भी वही गरीबी उस कृषक का अभिमान है। ऐसे कृषक पर कवि आज गर्व करना चाहता है और उसके सम्मान में गीत गाना चाहता है।

प्र.२ आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) संजाल पूर्ण कीजिए ।

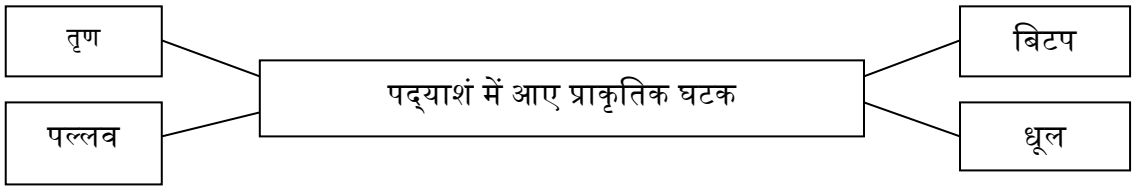

२) **i) निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए:**

१. पत्ते – पल्लव / पात २. पेड़ - बिटप

ii) निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग जोडकर नए शब्द बनाइए:

१. लुप्त – विलुप्त २. संपन्न - असंपन्न

३) गोस्वामी तुलसीदास जी बताते हैं कि वर्षा ऋतु में हर तरफ हरियाली छाई हुई है। पृथ्वी बड़ी – बड़ी घास से भर गई है। अब हर तरफ हरी – हरी घास हो जाने की वजह से जो पगडंडियाँ या रास्ते थे, वे ऐसे लुप्त हो गए हैं, जैसे पाखंडी के पाखंडभरे मत अर्थात विचारों के प्रचार से सद्ग्रंथ व उसमें निहित ज्ञान कुछ समय के लिए लुप्त हो जाता है।

विभाग ३ – पूरक पठन

प्र.३ अ) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए ।

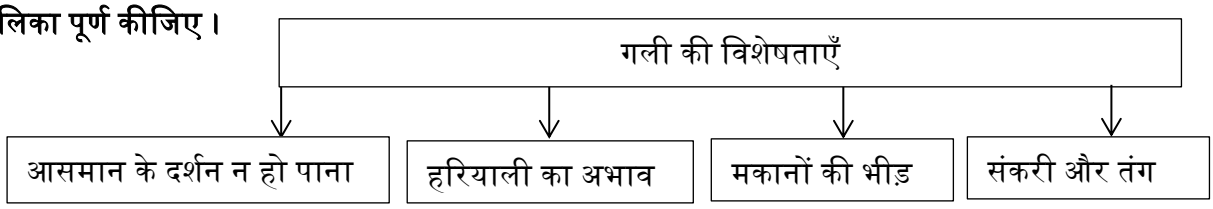

पंछियो के संरक्षण के प्रति मनुष्य की पहल:

बेजुबान पक्षियों की सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है। ये पंछी पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में अहं भूमिका निभाते हैं अत: इनका संरक्षण और संर्वधन करने हेतु दैंनदिन जीवन में छोटी – छोटी किंतु महत्त्वपूर्ण सावधानियाँ बरतना हमारा नैतिक कर्तव्य है। हम अधिक से अधिक फलदार वृक्ष लगाएँ ताकि पक्षी फलाहार करके स्वस्थ और लंबी आयु जी सकें। पटाखे, आतिषबाजी से परहेज करें क्योंकि इनके शोर शराबे और चिंगारियों की वजह से पेड़ों पर आश्रित

पंछी दूर उड़कर पलायन करते हैं और कभी – कभी मौत का शिकार हो जाते हैं। अपने पतंगबाजी के शौक को खत्म करें ताकि पंतग के मांजे में अटककर घायल होने वाले पंछियों को बचाया जा सकें। घर के बाहर पानी भरकर रखें और कुछ दाने पंछियों को चुगने के लिए बिखेरकर हम पंछियों के कलरव एवं संरक्षण को सुनिश्चित कर सकते हैं। बिमार एवं घायल पंछियों के इलाज हेतु अस्पताल का होना भी आवश्यक है।

प्र.३ आ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए।

१) संजाल पूर्ण कीजिए।

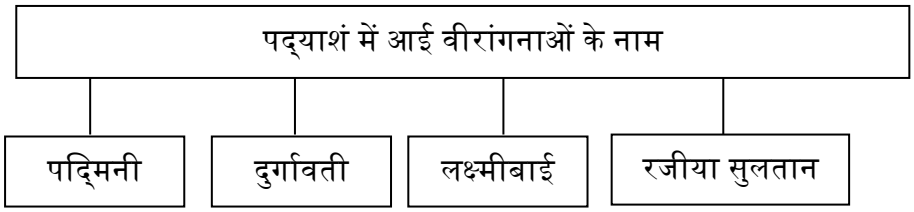

२) आज की भारतीय नारी:

हमारे देश की आधुनिक नारी आज पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। आज उसने अपने स्तर पर हर क्षेत्र में सफलता हासिल की है। शिक्षा के स्तर पर तो वह पुरूषों से आगे निकल गई है। हम अकसर अखबारों में पढ़ते हैं – परीक्षा परिणाम में छात्राओं ने बाजी मार ली, फला – फला परीक्षा में छात्रा सर्वप्रथम इसी तरह विज्ञान, व्यापार, अंतरिक्ष, खेल, राजनिति हर क्षेत्र में भारतीय नारी ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। अपनी दृढ इच्छा शक्ति के कारण उसने पुरूषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र मिसाइल, सेना, हवाई जहाज की उड़ान भरने जैसी चुनौतियाँ का भी सामना किया और उन क्षेत्रों में भी अपनी चमक दिखा दी है। अत: आज की भारतीय नारी ने साबित कर दिया है कि वह पुरूषों की बराबरी कर सकती है उनसे टक्कर ले सकती है और उनसे आगे भी जा सकती है। इस बात में रत्ती भर भी संदेह नहीं है कि आज इन शिक्षित महिलाओं के लिए नए – नए सफलता के द्वारा खुल रहे हैं।

विभाग ४ – भाषा अध्ययन (व्याकरण)

प्र.४ सूचना के अनुसार कृतियाँ किजिए।

१) अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानकर लिखिए।

<u>सारी</u> - विशेषण

२) निम्नलिखित अव्ययों में से किसी एक अव्यय का अपने वाक्य में प्रयोग किजिए। (दो में से कोई एक)

अ) गाडी तुरंत आ गई। आ) वर्षा के कारण समुद्र का पानी बढ़ गया।

३) कृति पूर्ण कीजिए। (दो में से कोई एक)

शब्द	संधि- विच्छेद	संधि -भेद
परमात्मा	परम + आत्मा	स्वरसंधि

अथवा

शब्द	संधि- विच्छेद	संधि -भेद
दुर्लभ	दु: + लाभ	विसर्ग संधि

४) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक सहायक क्रिया को पहचानकर उसका मूल रूप लिखिए।

अ) समुद्र स्याह और भयावह दीखने लगा। आ) मुझे बैंक की नौकरी करनी पड़ी।

सहायक क्रिया	मूल रूप
लगा	लगना
पड़ी	पड़ना

५) निम्नलिखित में से किसी एक का क्रिया प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप लिखिए।

क्रिया	प्रथम प्रेरणार्थक रूप	द्वितीय प्रेरणार्थक रूप
अ) खेलना	खिलाना	खिलवाना

आ) छोड़ना	छुडाना	छुडवाना

६) निम्नलिकित मुहावरों में से किसी एक मुहावरे का अर्थ लिखकर अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए।

अ) कलेजे में हुक उठना – मन में वेदना उत्पन्न होना

वाक्य - नारी पर हुए अत्याचार की खबर पढ़कर कलेजे में हुक उठता है।

आ) तिलमिला जाना – क्रोध में आना

वाक्य - परीक्षा के दौरान अमन को खेलते हुए देखकर उसके माता – पिता तिलमला गए।

अथवा

अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए।

[गुजर – बसर होना , सीना तानकर खड़े रहना]

भीषण जल प्रलय के बाद किसी तरह पीडितों की गुजर – बसर चल रहा है।

७) निम्नलिखित वाक्य पढ़कर प्रयुक्त कारकों में से कारक पहचानकर उसका भेद लिखिए।

अ) बच्चे रेत का घर बनाने में जुट गए।

कारक चिह्न	कारक भेद
का	संबंध कारक

८) निम्नलिखित वाक्य में यथास्थान उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए।

वह चौकी, चारपाई के इधर – उधर ताकने लगी।

९) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्ही दो वाक्यों का सूचना के अनुसार काल-परिवर्तन कीजिए।

i) उन्होंने बाजार से नई पुस्तक खरीदी थी ।

ii) दिल्ली शहर में घर ढूँढूँगा ।

iii) लिखने से पहले मैं पढ़ना शुरू करता हूँ ।

१०) i) निम्नलिखित वाक्य का रचना के आधार पर भेद पहचानकर लिखिए।

कई पत्थरों के बीच में पानी भर गया है। - सरल वाक्य

ii) निम्नलिखित वाक्यों में से किसी एक वाक्य का अर्थ के आधार पर दी गई सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए।

१) प्राण को मन से अलग कर दो ।

२) सोनाबाई ने एक पल लड़की को घूरा होगा ।

११) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके वाक्य फिर से लिखिए।

i) यह समाज के माथे पर कलंक है ।

ii) में बीस रूपये में चार भुट्टे खरीदकर चल पड़ा ।

iii) यह विषमता कैसे दूर हो?

विभाग ५ – उपयोजित लेखन

प्र.५ अ) सूचना के अनुसार लिखिए।

१) पत्रलेखन

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर पत्र-लेखन कीजिए।

i) दिनांक २७ जनवरी२०१८ ,

प्रिय मित्र महिपाल,

सप्रेम नमस्ते।

निबंध प्रतियोगिता में शानदार सफलता पाने के लिए हार्दिक बधाई। मुझे विश्वास है कि आगे भी तुम ऐसे ही कोशिश करते रहोगे और सफलता की नई उँचाइयाँ प्राप्त करोगे।

इस सफलता के मकाम पर पहुँचने के पीछे निश्चय ही तुम्हारी कड़ी मेहनत और किताबें पढ़ने की रूचि है। यह सम्मान तुम्हारे लिए वास्तव में गौरव का विषय है। यह तो तुम्हारी प्रतिभा का गौरव है। मैं तो तुममें भविष्य का हिंदी लेखक देखने लगा हूँ। तुम्हारे माता-पिता को भी तुम पर गर्व महसूस हुआ होगा। सचमुच भाग्यशाली है चाचा-चाची जो उन्हें तुम जैसा होनहार पुत्र मिला।

अब परीक्षाएँ नजदीक आ रही हैं। मेंने अपनी समय-सारीनी बना ली है और उसके अनुसार पढ़ाई शुरू कर दी है। उम्मीद करता हूँ कि तुमने भी अपनी पढ़ाई शुरू कर दी होगी और परीक्षा में भी तुम जरूर अव्वल रहोगे। मेरी शुभकामनाएँ और माता-पिता का आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। मेरे माता-पिता ने भी तुम्हें ढेर सारी बधाइयाँ और शुभाशीष भेजा है। चाचाजी तथा चाचीजी को मेरा प्रणाम कहना। अगले पत्र में प्रतियोगिता का विवरण अवश्य लिख भेजना। गुड़िया रानी को मेरा प्यार देना।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा मित्र,

आरव परांजपे

नाम : आरव परांजपे

पता : २०, सुभाष नगर,

डोंबिवली।

ई – मेल आई डी – aravparanjpe@gmail.com

अथवा

ii) दि. ६ जनवरी,२०१८

प्रति,

मा. व्यवस्थापक,

भारत बुक डेपो,

सी. पी. टँक, मुंबई।

विषय : प्राप्त पुस्तकों की कम प्रतियाँ और फटी होने की शिकायत।

संदर्भ : आप द्वारा भेजा गया पुस्तकों का पार्सल।

मा. महोदय,

आपके द्वारा भेजा गया पुस्तकों का पार्सल मिला। धन्यवाद ! बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि पुस्तकें भेजने में आपसे धाँधली हुई है। एक तो हमारी माँग सूची के अनुसार किताबें भेजी नहीं गई हैं। पुस्तकों की कम प्रतियाँ हमें मिली हैं। उनमें कुछ पुस्तकें तो फटी – पुरानी है।

आप उन्हें बदलकर अपने ग्राहक को खुश रखने की कोशिश करें। हमें प्रेमचंद जी के गोदान की दो प्रतियाँ और शब्दकोश की एक प्रति कम मिली है जो आप भेज दें। अतीत के चलचित्र और अरे यायावर याद रहेगा ये दो किताबें पुरानी हैं अतः उन्हें बदल दें।

उम्मीद करती हूँ कि आप हमें निराश नहीं करेंगे। जल्द - से - जल्द हमारी माँग के अनुसार पुस्तकें भिजवाकर अपने पुस्तकालय की साख बनाए रखेंगे।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

भवदीया,

उमा शर्मा।

नाम : उमा शर्मा,
पता : महात्मा गाँधीं पार्क,
नांदेड।
Umasharma@gmail.com

२) गद्य आकलन

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर परिच्छेद में एक-एक वाक्य में हो ।

१) पोंगल किस राज्य का त्योहार है?
२) पोंगल के तीसरे दिन कितने बूढ़े बैलों को छोड़ा जाता है ?
३) पोंगल के दौरान बैलों की सींगो में क्या बाँधा जाता है?
४) प्राचीन काल में कौन – से खेल का आयोजन स्वयंवर के रूप में किया जाता था?

आ) सूचना के अनुसार लिखिए ।

१) वृत्तांत – लेखन

अपने क्षेत्र में स्थानीय निवासियों द्वारा मनाए गए वृक्षरोपण समारोह का वृत्तांत ६० से ८० शब्दों मे लिखिए ।

२२ जुलाई,२०१९ को अकोले में बृहद वृक्षारोपण समारोह संपन्न हुआ। अकोले ग्रामपंचायत की इस समारोह में विशेष भूमिका रही । श्रीमान सरपंच महोदय ने इस अवसर पर स्थानीय निवासियों को करते हुए कहा कि, 'हमारे वेद, पुराण सब यही कहते हैं कि एक वृक्ष दस पुतों के समान होता है। वृक्ष है तो हमारा वर्तमान सुखद और भविष्य सुरक्षित है। आज लगाया गया हर वृक्ष हमारे पुत्र की तरय हमारा पालनहार और जीवन का आधार होगा।' स्थानीय निवासियों ने तालियों की गूँज के साथ सरपंच महोदय की दाद दी और वृक्षारोपण में अपनी ओर से सहयोग के लिए हामी भरी।

इस अवसर पर अकोले के कई मान्यवरों ने पौधे लगाए और उन पौधों के रख – रखाव की जिम्मेदारी उठाने की शपथ ली। समारोह का समापन जूलूस के साथ हुआ। जुलूस में पथनाट्य भी किया गया जिसमें हर चौराहे पर वृक्ष का महत्त्व समझाया गया और उन्हें न काटने की बिनती की गई । वृक्ष संरक्षण एवं वृक्ष संवर्धन के दोहरे संदेश के साथ लगभग ५००० पौधे लगाए गए।

अथवा

कहानी लेखन

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग ७० से ८० शब्दों में कहानी लिखकर उससे मिलने वाली सीख लिखिए व उसे उचित शीर्षक दीजिए

मेहनती चिड़िया

आनंदवन नामक घने जंगल में एक बंदर रहता था। वह बहुत ही आलसी था। स्वयं के लिए घर बनाना तो दूर वह भोजन भी दूसरों का छीनकर खाता था। वह बंदर जिस पेड़ पर रहता था, उसी पेड़ की डाली पर एक चिड़िया भी रहती थी। उसने अपना एक छोटा – सा घोंसला बनाया था। एक दिन जोर की आँधी आई। बंदर तेज आँधी से बचने के लिए पेड़ से लिपट गया और चिड़िया अपने घोंसले में जा बैठी। धीरे – धीरे वर्षा भी शुरू हो गई। चिड़िया तो अपने घोंसले में सुरक्षित थी, परंतु बंदर के पास वर्षा से बचने के लिए कोई घर नहीं था। वह वर्षा में भीग गया और थर – थर काँपने लगा ।

जैसे ही वर्षा समाप्त हुई चिड़िया अपने घोंसले से निकलकर बंदर के पास आई। बंदर की हालत देखकर चिड़िया को दया आई। उसने बंदर से कहा, "भाई! तुम तो इतने हट्टे – कट्टे हो, मनुष्य की तरह काम भी कर सकते हो। तुम खुद के लिए घर क्यों नहीं बनाते ताकि ऐसे तूफान व बारीश से बचने के लिए तुम अपने घर में सुरक्षित रह सको"। चिड़िया की बात सुनकर बंदर को गुस्सा आया और उसने सोचा कि इतनी छोटी – सी चिड़िया मुझे नसीहत दे रही

है। इसे अभी सबक सिखाता हूँ। उसने झट से जाकर चिड़ियाँ का घोंसला नीचे गिरा दिया और जोर – जोर से हँसने लगा।

चिड़िया बंदर के इस बर्ताव को देखकर बोली, "बेवकूफ को सीख देना अपने लिए मुसीबत मोल लेना है"। इतना कहकर वह फुर्र से उड़ गई।

बंदर उसे देखता रह गया। चिड़िया ने दुसरे पेड़ पर जाकर अपना घोंसला बनाया और खुशी – खुशी रहने लगी।

सीख : मेहनत करने वाले कभी दुखी नहीं होते।

२) विज्ञापन लेखन

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर ५० से ६० शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए ।

एक तंदुरूस्ती हजार नियामत

✚ आरोग्य सेवा शिबिर ✚

- ❖ स्वस्थ और चुस्त – दुरूस्त रहिए
- ❖ तज्ज्ञ वैद्य द्वारा जाँच कीजिए
- ❖ आरोग्य सेवा का लाभ उठाइए
- ❖ स्वास्थ्य रक्षा का सुनहरा अवसर
- ❖ त्वचा रोग, हृदय रोग, रक्तचाप

शक्कर की बीमारी का १००% इलाज !!

"शीघ्र आइए

और

स्वस्थ सुंदर शरीर पाइए"

संपर्क करे – डॉ. मधूसूदन चोप्रा

022 – 28484848

समय – सुबह १० से शाम ६ बजे तक

३) निबंध लेखन

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग ८० से १०० शब्दों में निबंध लिखिए ।

१) ऐतिहासिक स्थल की सैर २) मेरा प्रिय गायक ३) **फूल की आत्मकथा**

फूल की आत्मकथा

रंगों की पहचान हूँ मैं'

बसंत ऋतु की शान हुँ मैं

ईश्वर का वरदान हूँ मैं'

सुगंध मेरी आत्मा है। हवा के झोंकों के साथ मैं संसार भर में विचरण करता हूँ और संसार को महका देता हूँ। खुशी हो या गम आपका साथ अवश्य देता हूँ, पहचाना मुझे? मै हूँ गुलाब का एक फूल।

अनगिनत काँटों के ऊपर खिला हूँ। काँटों की चुभन की एक शिकन तक मेरे चेहरे पर नहीं। रंग, रुप, गंध में मुझे मात देनेवाले अन्य फूल भी हैं परंतु फूलों का राजा मुझे बनाया गया। जानते हो क्यों? आप मनुष्यों में से एक भले इंसान को काँटों का ताज पहनाया गया और वह आप सबका मसीहा बन गया। अब मुझे बताइए काँटों का ताज पहनना और काँटों के सिंहासन पर बैठना, चुभन कहाँ अधिक होगी? रेगिस्तान में जहाँ पशु-पक्षी, मनुष्य सब अपना होश हवास खो बैठते हैं वहाँ भी मेरी हँसी में कोई अंतर नहीं पड़ता। इसीलिए फूलों की दुनिया का बादशाह मैं हूँ।

इस छोटी सी आयु में अपना जीवन सार्थक बनाने की चाह मुझमें भी है। मेरी पंखुडियों से गुलकंद बनाया जाता है। गुलाब जल और इत्र बनाने के लिए भी मैं काम आता हूँ। तुम बच्चों के चाचा नेहरु जी के सीने पर शान से

बैठता था मैं। ईश्वर के मस्तक पर या चरणों पर मुझे चढ़ाया जाता हैं। परंतु मैं तो वनमाली से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे तोड़कर उस पथ पर फेंक दे जिस पथ पर मातृभूमि के लिए कुरबान होने शहीद चलते हैं। उनके पैरों तले कुचले जाने पर भी मैं स्वयं को भाग्यवान समझूँगा।

आप सभी को यही कहना चाहता हूँ कि, 'मुक्त जीवन की प्रगति भी द्वंद्व में संघात में' अर्थात संघर्ष ही जीवन है। जबतक संघर्ष करते रहोगे जीवन में प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहोगे। जिस दिन संघर्ष खत्म हो जाएगा उस दिन से पतन शुरु हो जाएगा। मैं स्वयं डाली पर कड़ी धूप, पवन के झोंके सहते हुए प्रसन्न रहता हूँ और दुसरों को भी प्रसन्न करता हूँ। पर मुझे तोड़ देने पर इन संघर्षों से जब मुक्ति मिलती है तब मुरझाकर जीवन का ही अंत हो जाता है। अपने इस जीवन से जो मैंने सीखा वही आपको समझाने की यह छोटी सी कोशिश मैंने की है।

२) ऐतिहासिक स्थल की सैर

गर्मी की छुट्टी में इस बार मैंने अपने परिवार के साथ मिलकर किसी ऐतिहासिक स्थल की सैर का कार्यक्रम बनाया। वैसे तो हमेने बहुत सारे ऐतिहासिक स्थल देखे हैं, पंरतु इस बार हमें किसी नए स्थल पर जाना था।साँची एक प्रसिद्ध स्थाल है, इसलिए हमने साँची जाने का निश्चय किया।

रेलगाड़ी द्वारा भोपाल होकर मैं अपने माता – पिता के साथ साँची पँहुची। आध्यात्म, कला और इतिहास में रूचि रखने वाले लोगों को साँची हमेशा आमंत्रित करती है। सुबह ९ बजे हम साँची पहुँचे और टिकट लेकर हमने स्तूपं पर चढ़ाई की। सुनहरी धूप, खुशनुसा मौसम और आस – पास की हरियाली देखकर लगा कि महात्मा बुद्ध के संदेशों को प्रसारित करने के लिए सम्राट अशोक का इस जगह का चुनाव बहुत उपयुक्त था।

पत्थर के भव्य द्वार पर तीनमुखी शेरों वाला चिह्न जिसे 'लायन केपिटल' कहते हैं। वह हमें यहाँ की कथा कहता हुआ कथावाचक प्रतीत हुआ। पत्थरों का कलात्मक निर्माण, वास्तुकला और शिल्पकला की दृष्टि से साँची का स्तूप बहुत अनुपम है। उसके बाद हम विजय मंदिर देखने गए। इस अद्भुत और भव्य मंदिर को प्राचीन वास्तुकला का चमत्कार कहा जा सकता है। इस मंदिर को भारत का दूसरा 'सूर्य मंदिर' भी कहते हैं। इसके बाद हम बेतवा नदी के पुल से गुजरते हुए उदयगिरि पहुँचे। इस भव्य पहाड़ी के निकट ही गुलाब का एक आकर्षक उद्यान भी है। उदयगिरि की गुफाओं के होटल में नाश्ता कर हम ऐतिहासिक हेलियोडोरस का स्तंभ देखने पहुंचे।

यहाँ से लगभग ३० किमी दूर हम वट का एक प्राचीन वृक्ष देखने गए, जिसकी सौ से भी . अधिक शाखाएँ लगभग आधा किमी क्षेत्रफल में फैली हुई हैं। इसे देखने के बाद हम साँची वापस आ गए। रात को होटल में विश्राम किया और अगले दिन हमने घर के लिए ट्रेन पकड़ी।

ऐतिहासिक स्थल की ये सैर हमारी यादगार सैर रहेगी। इस सैर से हमें अनेक प्रकार की जानकारियाँ भी प्राप्त हुई हैं।

३) मेरा प्रिय गायक

वैसे तो मुझे गायक व गायिकाओं के गीत सुनने पसंद हैं, लेकिन मेरे प्रिय गायक मशहुर पार्श्वगायक किशोर कुमार हैं। उनका जन्म ४ अगस्त, १९२९ को मध्य प्रदेश के खंडवा शहर में हुआ था। उनका असली नाम कुमार गांगुली था। उनके पिता कुंजीलाल एक वकील थे और माँ गौरी देवी एक गृहणी थी। किशोर कुमार अपने तीन भाई – बहनों में सबसे छोटे थे।

किशोर कुमार ने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद फिल्म जगत में अपना कैरियर बनाने का फैसला किया। जब वे फिल्मों में छोटी भीमिकाएँ कर रहे थे, तो प्रसिद्ध संगीत निर्देशक खेम चंद्र प्रकाश ने उनकी गायन प्रतिभा को देखा और नया रूप देने की कोशिश की। किशोर कुमार ने एस. डी. बर्मन के साथ मिलकर गीत गाए। बाद में उन्हें एक बड़ी फिल्म आराधना का गीत 'मेरे सपनों की रानी' गना गाने का मौका मिला और यह गीत पूरे देश में मशहुर हो गया। उनके गीत इतने उत्कृष्ट हो गए कि कलाकार को भी उस गीत पर अभिनय या नृत्य करना मुश्किल हो जाता था। उनका गायन दिल को छू लेने वाला और इतना भावपूण था कि वे फिल्म जगत में बहुत जल्दी प्रसिद्ध हो गय। उन्होंने ९० से भी अधिक फिल्मों में गाने गाए।

किशोर कुमार एकमात्र ऐसे गयक थे, जिन्हें आठ बार 'फिल्म फेयर एवॉर्ड' मिला। उन्हें ई. एम. ई. (लॉस एंजिलिस) तथा 'लता मंगेशकर पुरस्कार' (म. प्र. शासन) से भी स्म्मानित किया आज इस दुनिया में नहीं हैं, परंतु उनके प्रसिद्ध गीतों की वजह से आज भी पूरी दुनिया उन्हें याद करती है। मैं भी बड़ा होकर उनके जैसा एक गायक

बनना चाहता हूँ और अपने माता – पिता व पूरे देश का नाम रोशन करना चाहता हूँ।